श्री श्रीगुरु गौराङ्गो जयतः

संशय छेदन

श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज

प्रथम संस्करण
५ अप्रैल, २०१७

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र जी एवं परम पूज्यपाद
ॐ १०८ श्रील भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज जी की
पावन आविर्भाव तिथि श्रीरामनवमी के
सुअवसर पर प्रकाशित

श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
३५, सतीश मुखर्जि रोड,
कलकत्ता–७०००२६

Email: info@sreecgmath.org
Website: www.sreecgmath.org
App: Paramhamsa Vani

आनुकूल्य: श्रीजोगिन्दर पाल शर्मा

परमहंस
ॐ १०८ श्री श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज के पावन श्रीकरकमलों में
समर्पित

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व में हरे कृष्ण संकीर्तन धर्म प्रचार के मूल स्रोत गौरवाणी विग्रह जगदगुरु श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद जी के प्रियतम शिष्य एवं श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाता क्षमागुणावतार श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज जी धर्मनिष्ठा, सतीर्थ प्रेम एवं गुरुसेवा का अनुपम उदाहरण होने के साथ-साथ भक्ति सिद्धान्त के विरुद्ध सिद्धान्तों का खण्डन करने एवं भक्ति अनुकूल विचारों को स्थापन कर समझाने की आलौकिक क्षमता से सम्पन्न थे। उनकी प्रत्युत्पन्नमति एवं उपस्थित बुद्धि इस प्रकार कुशाग्र थी कि कोई अप-सिद्धान्तिक बात बोल कर उनके सामने टिक नहीं सकता था।

आधुनिक युग के तार्किक मनुष्यों को अतिआधुनिक युक्तियों द्वारा समझाने की उनकी असाधारण क्षमता एवं अमानी मानद स्वभाव के कारण जो उनके पास एक बार आता वह तुरन्त मोहित हो जाता। उनकी इसी योग्यता को देख उनके परमाराध्यतम गुरुदेव जी ने विश्वविख्यात वैज्ञानिक सी.वी. रमन एवं तत्कालीन प्रकाण्ड विद्वान

पंचानन तर्करत्न के साथ वार्तालाप के लिए उनको भेजा एवं सम्पूर्ण भारत में प्रचार करते समय जिन विशेष-विशेष परिप्रश्न करनेवाले जिज्ञासुओं एवं तार्किक मौलवियों के साथ उनके जो कथनोपकथन हुए उनमें से कुछ इस पुस्तिका में प्रकाशित किए जा रहे हैं। जिनके पठन से पाठक के हृदय में उठने वाले प्रत्येक संशय का सम्पूर्णत: छेदन एवं परम ब्रह्म भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में रति-मति का शुभारम्भ अवश्यम्भावी है।

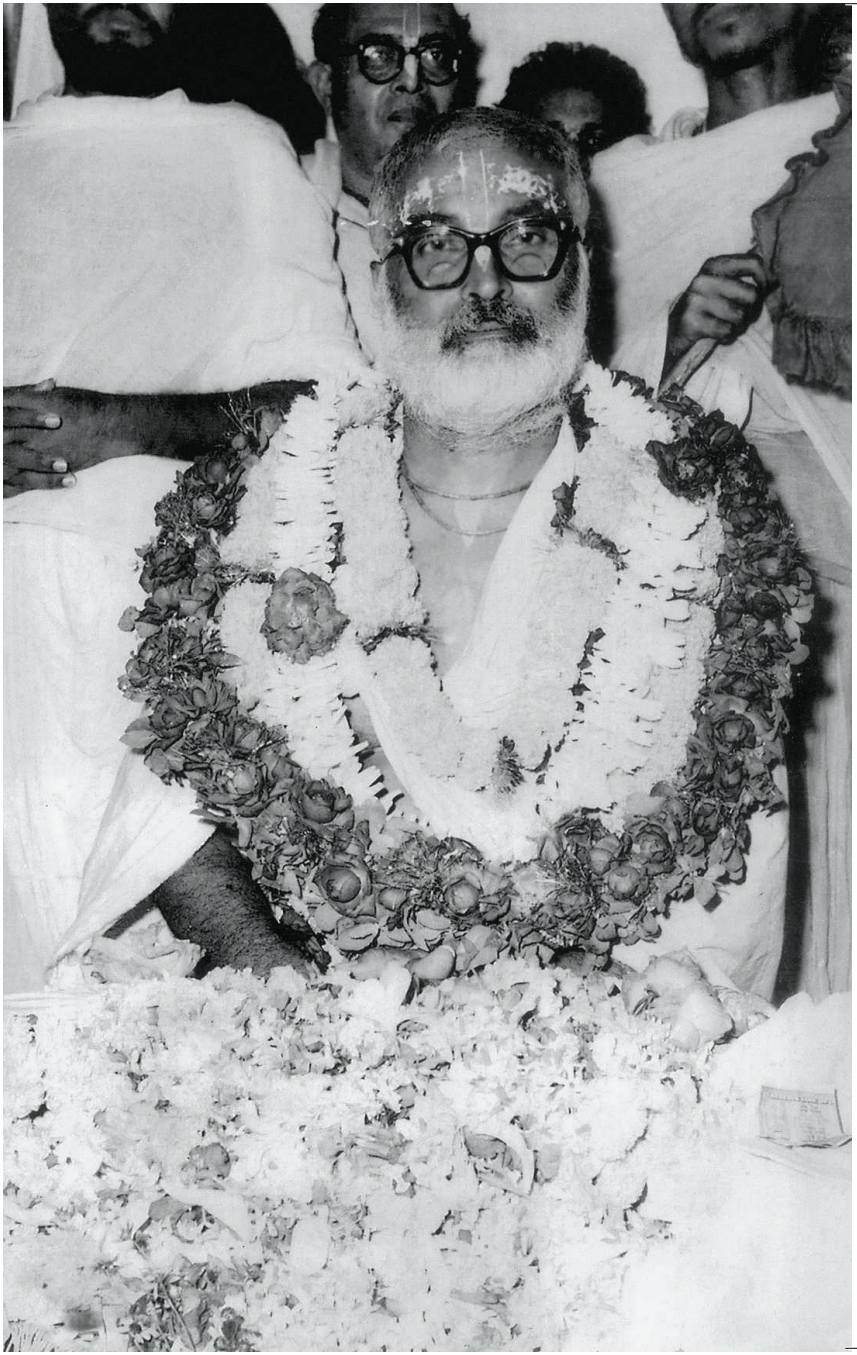

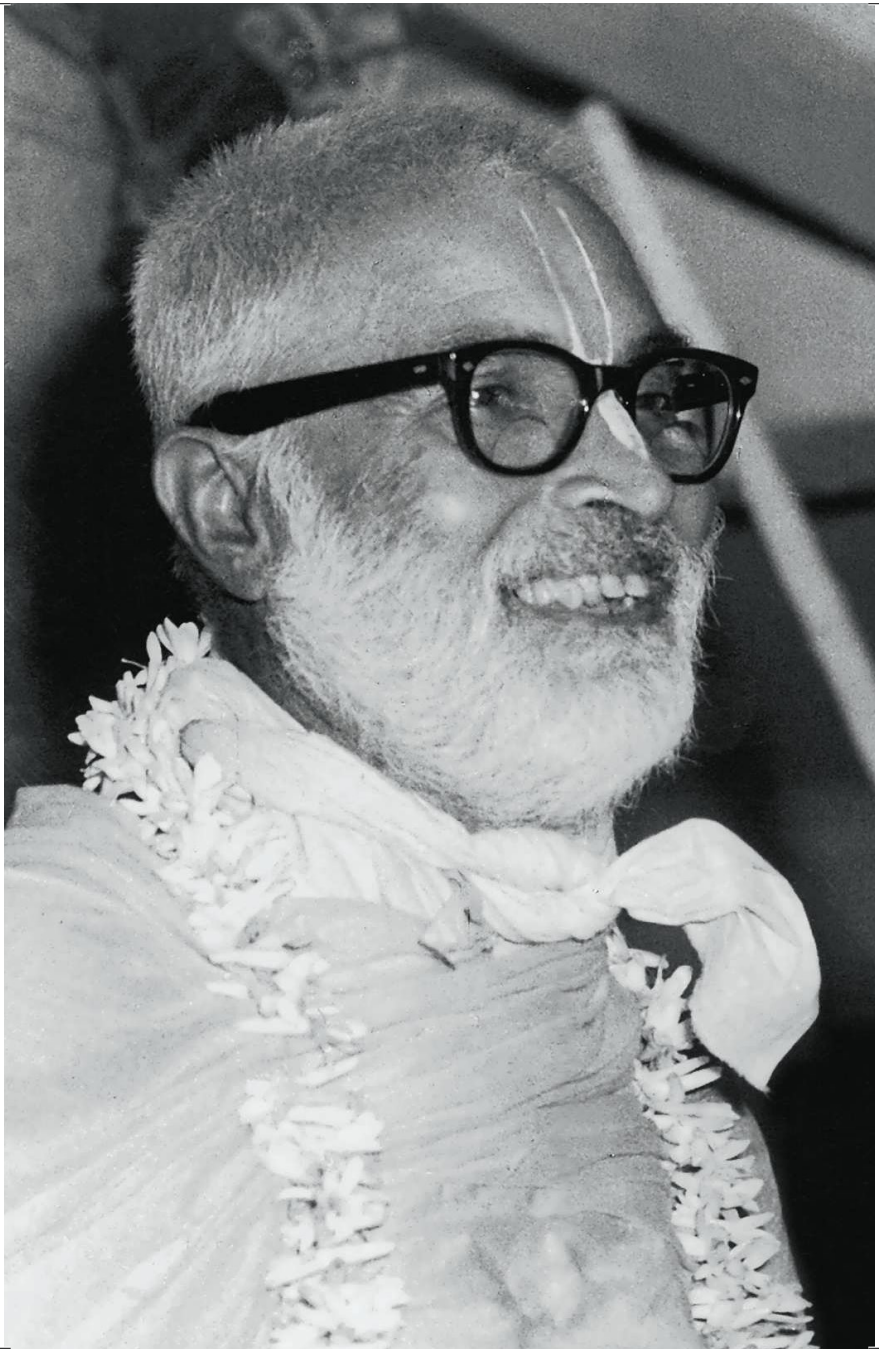

डॉ. सी. वी. रमन के साथ कथोपकथन

डॉ. सी. वी. रमन के साथ कथोपकथन

यह सन् १९३० की बात है, जब श्रील महाराज जी (श्री श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज) के गुरुदेव श्रील प्रभुपाद प्रकट थे। श्रील प्रभुपाद के प्रकट काल में कलकत्ता के बाग-बाज़ार स्थित श्रीगौड़ीय मठ में, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में विशाल धर्म-सम्मेलन होता था, जो कि एक महीने तक चलता था। इस सम्मेलन में प्रतिदिन कोई न कोई विशेष व्यक्ति सभापति का आसन ग्रहण करता था। उक्त धर्म सम्मेलन में भारत के विख्यात वैज्ञानिक डॉ. सी. वी. रमन के कुछ छात्र भी प्रवचन सुनने के लिए आते थे। एक दिन सभी छात्र मिल कर श्रील प्रभु पाद के पास गये और उन्होंने निवेदन किया कि हम देखते हैं कि आपके इस धर्म सम्मेलन में प्रतिदिन कलकत्ता के किसी न किसी विशेष व्यक्ति को सभापति के आसन पर बैठने के लिए निमन्त्रित किया जाता है, परन्तु हमारे अध्यापक डॉ. सी. वी. रमन जी को कभी निमन्त्रण नहीं

किया गया। उनका नाम तो सारे विश्व में विख्यात है। छात्रों की बात सुनकर श्रील प्रभुपाद ने कहा कि उनको निमन्त्रण करने में हमें कोई आपत्ति नहीं है। ऐसा कह कर श्रील प्रभु पाद ने महाराज जी को निर्देश दिया कि वे डॉ. सी. वी. रमन को धर्म-सम्मेलन मे सभापति पद ग्रहण करने के लिए निमन्त्रण करें।

श्रील महाराज जी डॉ. रमन से मिलने उनके घर गये परन्तु डॉ. रमन उस समय घर पर नहीं थे। उनकी धर्मपत्नी ने बताया कि इस समय वे सरकुलर रोड पर स्थित अपनी laboratory (प्रयोगशाला) में होंगे। श्रीमती रमन का जवाब सुन कर श्रील महाराज जी डॉ. रमन की लॅबोरेटरी पर पहुँचे। डॉ. रमन के साथ जब उनका साक्षात्कार हुआ, उस समय वे अपनी लॅबोरेटरी की दूसरी मंज़िल में स्थित एक बड़े हॉल के कोने में बैठे हुए अकेले ही कुछ परीक्षण कर रहे थे। डॉ. रमन बंगला या हिन्दी अच्छी तरह नहीं जानते थे, इसलिए श्रील महाराज जी की उनके साथ अंग्रेज़ी में ही बातचीत हुई।

सर्वप्रथम डॉ. रमन ने श्रील महाराज जी से उनके आने का कारण पूछा। श्रील महाराज जी ने कहा, ''कलकत्ता के

बाग-बाज़ार स्थित श्री गौड़ीय मठ में, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी उपलक्ष्य में एक महीने का धर्म-सम्मेलन होता है, जिसमें प्रतिदिन कलकत्ता के कोई न कोई विशिष्ट सज्जन सभापति आसन ग्रहण करते हैं। आप भी एक दिन सभापति के आसन को अलंकृत करें, ये हमारी प्रार्थना है।''

श्रील महाराज जी की बात सुन कर डॉ. रमन ने कहा, ''तुम्हारे केष्ट-विष्ट् को (यानि कृष्ण-विष्णु को) मैं नहीं मानता हूँ। इन्द्रियों द्वारा जो अनुभव नहीं होतीं, ऐसी काल्पनिक वस्तुओं के लिए मैं समय नहीं दूँगा। मेरा समय बहुत कीमती है। हाँ, विज्ञान या शिक्षा के विषय में कोई सभा होने से मैं जा सकता हूँ।''

श्रील महाराज: आपके छात्र प्रतिदिन बाग-बाज़ार स्थित गौड़ीय मठ में स्वामी जी लोगों के भाषण सुनने के लिए आते हैं। उसी सभा में हम कलकत्ता के विशेष व्यक्तियों को सभापति बनाते हैं। आपके छात्रों की इच्छा है कि एक दिन आप भी सभापति का आसन ग्रहण करें। अपने गुरुदेव जी के निर्देशानुसार मैं आपको निमन्त्रण देने आया हूँ। आप हमारी प्रार्थना को मंजूर कर लीजिए।

डॉ. रमन: क्या तुम अपने भगवान को दिखा सकते हो?

यदि दिखा सको, तो जाऊँगा।

(जिस हॉल (hall) में बातचीत हो रही थी, उस हॉल के एक ओर कोई भी खिड़की या दरवाजा नहीं था, सिर्फ एक लम्बी दीवार थी, जिसके दूसरी ओर पूरा उत्तरी कलकत्ता था।)

श्रील महाराज: अपने सामने खड़ी इस दीवार के पीछे मैं कुछ नहीं देख पा रहा हूँ, यदि मैं कहूँ कि इस दीवार के पीछे कुछ नहीं है, तो क्या मेरी बात सच होगी?

डॉ. रमन: आप नहीं देख सकते हो, परन्तु मैं अपने यन्त्र के द्वारा देख सकता हूँ।

श्रील महाराज: यन्त्र की भी तो एक सीमा है। जितनी दूर यन्त्र की योग्यता है, माना, वहाँ तक आपने देख लिया परन्तु उसके बाद कुछ नहीं है, ऐसा कहना क्या सच होगा?

डॉ. रमन: हो या न हो, उसके लिए मैं समय नहीं दूँगा। जो वस्तु तुरंत मेरे sense experience में नहीं आ सकती, उसके लिए मैं अपना कीमती समय नहीं दे सकता। क्या आप भगवान को दिखा सकते हो? यदि दिखा सको तो समय दूँगा।

श्रील महाराज: आपने जो वैज्ञानिक सत्य अनुभव किये हैं, यदि आपके छात्र आपसे ये प्रश्न करें कि पहले हमें वैज्ञानिक सत्य का अनुभव कराओ बाद में हम आपकी शिक्षा की ओर ध्यान देंगे, तब आप उन्हें क्या कहेंगे?

डॉ. रमन: (उच्च स्वर से) I shall make them realize (मैं उन्हें अनुभव करा दूंगा)।

श्रील महाराज: पहले आप अनुभव करा देंगे? बाद में वे आपके पास शिक्षा ग्रहण करेंगे?

डॉ. रमन: नहीं, जिस पद्धति को अवलम्बन करके मैंने वैज्ञानिक सत्यों का अनुभव किया है, वही पद्धति उन्हें भी ग्रहण करनी होगी। (No, they are to come to my process through which I have realized the truth) पहले उन्हें इस विषय को लेकर B.Sc. पढ़नी होगी, उसके बाद M.Sc. करनी होगी। उसके बाद यदि पाँच-छ: साल वह मेरे पास पढ़ें, तब मैं उनको समझा सकता हूँ।

श्रील महाराज: आपने जो बात कही, क्या भारतीय ऋषि-मुनि लोग उस बात को नहीं कह सकते? उन्होंने जिस पद्धति से आत्मा-परमात्मा-भगवान को अनुभव किया

है, आप भी उसी पद्धति को अवलम्बन करके देखें कि भगवान को अनुभव किया जा सकता है या नहीं? आप अपने उपलब्ध वैज्ञानिक सत्य भी अपने छात्रों को अनुभव नहीं करा पा रहे हैं, उसके लिए उन्हें विभिन्न प्रकार की विधियों को ग्रहण करना पड़ रहा है तो जो सर्वशक्तिमान, इंद्रिय ज्ञान से अतीत, अलौकिक परमेश्वर है, उन्हें क्या आप ऐसे ही जान सकते हैं? इसलिए जिस उपाय से भगवान की उपलब्धि होती है आप भी उसी उपाय को ग्रहण करके देखो उपलब्धि होती है या नहीं? यदि न हो तो आप छोड़ देना परन्तु पहले ही आप कैसे मना कर सकते हैं?

डॉ. रमन कोई जवाब न दे सके। कुछ समय पश्चात् डॉ. रमन कहने लगे कि वे कृष्ण सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते, वहाँ जाकर वे क्या कहेंगे? इस विषय को जो जानते है उन्हें निमन्त्रण करना अच्छा है।

श्रीगोपीनाथ बड़दलई के साथ वार्तालाप

श्रीगोपीनाथ बड़दलई के साथ वार्तालाप

श्रीगोपीनाथ बड़दलई जी, जो उस समय (१९४६-१९५०) आसाम के मुख्यमन्त्री थे, के निवास पर भागवत् पाठ की व्यवस्था हुई थी। एक दिन श्रीगोपीनाथ बड़दलई, भागवत् पाठ के समाप्त होने पर श्रील महाराज जी की भागवत् व्याख्या की हार्दिक प्रशंसा करते हुए कहने लगे, ''आपसे भागवत् पाठ सुन कर मुझे ऐसा लगता है कि आपके भागवत् पाठ का उद्देश्य एवं महात्मा गांधी जी के भाषणों का उद्देश्य एक ही है। आप भी अनेक शास्त्र-प्रमाणों एवं युक्तियों द्वारा बहुत कुछ समझाने के बाद सभी से कृष्ण नाम करवाते हैं और गांधी जी भी अपने भाषणों में अनेक प्रसंग सुना कर अन्त में सभी को 'रामधुन' करवाते थे। आप दोनों का ही उद्देश्य है, सभी को हरिनाम करवाना। मैं तो आप दोनों में कोई भी अन्तर नहीं देखता हूँ। आपका इस सम्बन्ध में क्या मत है ये मैं जानना चाहता हूँ।''

श्रीगोपीनाथ बड़दलई की श्रील महाराज के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा व प्रीति होने के कारण, श्रील महाराज जी ने सोचा कि यदि अब इन्हें अप्रिय सत्य बात कही जाये तो क्या ये सहन कर पायेंगे? कई बातें सत्य होने से भी वह सभी को, सभी समय नहीं कही जा सकती, इसलिए विद्वान् व्यक्ति, ग्रहण करने का अधिकारी देखकर, उसके अधिकार के अनुसार ही उसे उपदेश देते हैं।

श्रील महाराज जी ने मुस्कराते हुए श्री बड़दलई जी को कहा, ''यदि आप नाराज न हों तो मैं अपनी राय व्यक्त करूँ?'' उत्तर में श्रीगोपीनाथ बड़दलई जी ने कहा, ''आपके मूल्यवान उपदेशों को सुन कर हम कृतार्थ हो गये। हमने इस प्रकार की ज्ञान से परिपूर्ण भागवत् व्याख्या पहले कभी किसी से नहीं सुनी। आप हमारे मंगल के लिये कुछ कहें और हम असन्तुष्ट हों, ये हो ही नहीं सकता। आप स्वच्छन्दतापूर्वक अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं।''

तब श्रील महाराज जी ने कहा, ''जब मैं अपने घर में रहता था, तब कांग्रेस के स्वाधीनता आन्दोलन से भी कुछ जुड़ा हुआ था। उस समय साबरमती से कांग्रेस की 'Young India' नामक एक अंग्रेज़ी पत्रिका प्रकाशित होती थी। मैं

उस पत्रिका को पढ़ता था। उसमें एक बार एक लेख में मैंने पढ़ा था कि गांधी जी ने किसी स्थान पर अपने भाषण में, देशवासियों को अपना देश-प्रेम जताने के लिऐ कहा था कि यदि ज़रुरत पड़े तो वे देश के लिये अपनी अत्यन्त प्रिय 'रामधुन' का भी त्याग कर सकते हैं। जहाँ तक मुझे याद है, पत्रिका में लिखा था, "I can sacrifice 'ramdhun' for my country", किन्तु हम लोग ठीक इसके विपरीत हैं- 'We can sacrifice country for Ramdhun', हमारे आराध्य 'राम' किसी के लिये नहीं हैं, वे स्वयं अपने लिये हैं एवं समस्त वस्तुएं उनके लिये हैं। पाश्चात्य दार्शनिकों ने भी 'Absolute' को इसी प्रकार संज्ञा दी है- 'Absolute is for itself and by itself', हम लोग 'It God' नहीं कहते। हमारे भगवान परम-पुरुष हैं इसलिये हम लोग कहते हैं कि 'Absolute is for Himself and by Himself' भगवान से ही अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड आते है; भगवान में ही उनकी स्थिति है तथा भगवान के द्वारा ही उनका संरक्षण होता है, इसलिए अनन्त करोड़ ब्रह्माण्ड भगवान के लिये हैं। भगवान की आराधना करने के लिये भगवद्-तत्व को समझने की जरुरत है।

श्री गोपीनाथ बड़दलई श्रील महाराज जी के असामान्य व्यक्तित्व से इस प्रकार आकर्षित हुए थे कि उन्होंने अपने संकल्प की बात श्रील महाराज जी के समक्ष व्यक्त की के वह संसार छोड़कर मठ में रहेंगे तथा सब प्रकार से अपने आपको भगवत् सेवा में लगाएंगे। परन्तु दुर्भाग्यवशत: उनके मित्रों ने उन्हें उस समय राजनीति से संन्यास न लेने दिया तथा कुछ समय बाद उनका देहान्त हो गया और वे अपने संकल्प अनुसार कार्य न कर सके। राजनीति एक ऐसा चक्र है कि जिसमें घुस जाने पर उससे छुटकारा पाना बहुत कठिन है।

श्रीगोवर्धन पिड़ि महोदय का हृदय परिवर्तन

श्रीगोवर्धन पिड़ि महोदय का हृदय परिवर्तन

श्रील महाराज जी ने व उनके गुरुभाईयों ने जब मेदिनीपुर में शुद्ध भक्ति का प्रचार आरम्भ किया (१९४२) तो श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की शुद्ध भक्ति की शिक्षा को सुन कर वहाँ के अनेक विशिष्ट नर-नारियों ने महाप्रभु जी की बतायी शिक्षा-पद्धति से भजन करने का दृढ़ संकल्प लिया। इसके फलस्वरुप थोड़े दिनों में ही वहाँ के जाने-माने धनी व्यक्ति अपने शहर में श्रीगौड़ीय मठ की एक शाखा खोलने के लिए उत्साहित हुए।

एक दिन श्रील महाराज जी ने प्रस्ताव रखा कि हमें यहाँ के धनी व्यक्ति श्रीगोवर्धन पिड़ि महोदय से मिलना चाहिए व उनसे मठ के लिए कुछ सेवा लेनी चाहिए। इस प्रस्ताव को सुन कर स्थानीय लोगों ने कहा कि वह बहुत ही कंजूस व्यक्ति है, किसी भिखारी को भी एक पैसा नहीं देता। यदि आप इसके पास जाएंगे तो वह आपका अपमान भी कर सकता है। अतः आप कभी भी उसके पास मत जाना।

सबकी बात सुनने के बाद, सभी को समझाते हुए श्रील महाराज जी ने कहा, ''साधु का मान-अपमान क्या होता है? चलो मान लिया गोवर्धन पिड़ि बहुत कंजूस है, तब तो साधु को अवश्य ही चेष्टा करनी चाहिए कि वह कंजूस न रहे, बल्कि एक सज्जन व्यक्ति बने। अच्छे व्यक्ति को अच्छा बनाने की ज़रुरत नहीं पड़ती; यदि खराब व्यक्ति को अच्छा बनाया जा सके, तभी तो प्रचार का सही फल समझा जाएगा।''

उनके ऊपर श्रद्धा रखने वाले स्थानीय व्यक्तियों को इस प्रकार समझाकर, एक दिन श्रील महाराज जी श्रीगोवर्धन जी के पास पहुँच गये। उनको देखते ही गोवर्धन जी खड़े हो गये, उनका स्वागत किया व बैठने के लिए उपयुक्त आसन भी प्रदान किया। आने का कारण पूछने पर उन्होंने कहा कि मेदिनीपुर शहर में श्रीगौड़ीय मठ का प्रचार केन्द्र खुल रहा है, ये बात बता कर उन्होंने श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की शिक्षा के माध्यम से उन्हें समझाया कि किस प्रकार जीवों का वास्तविक मंगल हो सकता है। उनके श्रीमुख से प्रभावशाली हरिकथा सुन कर श्री गोवर्धन जी बहुत प्रभावित हुए व उत्साह भरे स्वर में बोले-''हमारे गृह देवता

राधा-कृष्ण ही हैं, यहाँ प्रतिदिन उनकी सेवा-पूजा होती है। क्या आप उनका दर्शन करना चाहेंगे?''

''हाँ, क्यों नहीं'', कहकर वे गोवर्धन जी के साथ उनके घर के ऊपर बने मंदिर में गये। श्री राधा-कृष्ण के मनोरम श्री विग्रहों को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए और गोवर्धन जी से कहने लगे, ''हमारे आराध्य भी राधा-कृष्ण जी हैं, परन्तु अभी तक हमारे मठ में राधा-कृष्ण जी के विग्रह स्थापित नहीं हुए हैं। यदि आप इन विग्रहों को देकर हमें इनकी सेवा प्रदान कर दें तो हमें बहुत सुख होगा व हम आपके कृतज्ञ रहेंगे।''

उनकी बात सुनकर श्रीगोवर्धन जी ने कहा, ''यह तो हमारे गृह-देवता हैं। यहाँ तो इनके नाम से बहुत सी सम्पत्ति है। इन्हें आपके मठ में सेवा-पूजा के लिए हम कैसे दे सकते हैं? हाँ, यदि आप अपने मठ के लिए कहीं और से श्रीविग्रह ले आयें तो मैं उनका खर्चा दे सकता हूँ।''

श्रीगोवर्धन जी की बात सुनकर उन्होंने कहा, ''गौड़ीय मठ के विग्रह तो जयपुर से आते हैं।''

''कोई बात नहीं, जो खर्च होगा वो मैं दूँगा'', श्रीगोवर्धन जी ने कहा। मठ में आकर गोवर्धन जी से हुई

सारी बातचीत उन्होंने सब को बतायी। सारी घटना सुनकर सभी आश्चर्यचकित हो गये।

कंजूस कहलाने वाले गोवर्धन जी ने ही श्रीविग्रहों को जयपुर से लाने का, उनकी प्रतिष्ठा का, उनके अलंकरों का एवं श्रीविग्रहों के प्रतिष्ठा-समारोह में हुए उत्सवादि का सारा खर्चा दिया। इतना ही नहीं, जब उन्हें हरिकथा में आने के लिए निवेदन किया गया तो उन्होंने प्रतिदिन हरिकथा सुनने के लिए मठ में आना प्रारम्भ कर दिया। प्रतिदिन के सत्संग के प्रभाव से धीरे-धीरे उन्हें संसार की असारता का अनुभव होने लगा व साथ ही साथ उन्हें ये भी लगा कि वास्तव में भगवान का भजन करना ही मनुष्य जीवन का एकमात्र कर्तव्य है व हरिभजन से ही नित्य शांति लाभ हो सकती है। इन सब बातों को विचार करते हुए उन्होंने अपनी सभी गंदी आदतों को छोड़ दिया व शुद्ध भक्ति के सदाचार को अवलम्बन करके मठ से हरिनाम-मंत्र आदि लेकर हरिभजन का दृढ़ संकल्प लिया। श्री गोवर्धन बाबू के इस प्रकार के परिवर्तन को देख कर स्थानीय लोग बहुत विस्मित व उल्लासित हुए।

एक दिन गोवर्धन बाबू की धर्मपत्नी मठ में आई और

महाराज जी को प्रणाम करती हुई व्याकुलभाव से, रोते हुए कहने लगी, ''आपकी कृपा से मेरे पति में परिवर्तन हो गया है और हमारी सारी अशांतियाँ दूर हो गयी हैं।''

इन्कमटॅक्स ऑफीसर के प्रश्न का उत्तर

इन्कमटॅक्स ऑफीसर के प्रश्न का उत्तर

जालंधर में हो रहे वार्षिक सम्मेलन के समय (१९६६) जब श्रील महाराज जी डॉ. के. एन. कपूर के घर में ठहरे थे तो उस समय एक घटना घटी। जालंधर के एक धनी व्यक्ति तथा उनके साथ इन्कमटॅक्स ऑफीसर मिस्टर पाण्डे, महाराज जी से कुछ बातचीत करने के लिये समय मांगने लगे। डॉ. कपूर ने उनके लिए श्रील महाराज जी को १०-१५ मिनट समय देने के लिये निवेदन किया। आरम्भ में ही मिस्टर पाण्डे आक्रमक वाक्यों का प्रयोग करते हुये ज़ोर से कहने लगे, ''मैं आत्मा को नहीं मानता हूँ; परमात्मा को नहीं मानता हूँ, जिसे आँखों से नहीं देखा जाता, हाथ से स्पर्श नहीं किया जाता, उसका अस्तित्व मैं स्वीकार नहीं करता। मैं २० प्रश्नों का उत्तर लेने के लिये आपके पास आया हूँ।''

उनके वाक्यों को सुनकर श्रील महाराज जी ने यह जानना चाहा कि और प्रश्न क्या-क्या हैं? तत्पश्चात् वे प्रश्न

बोलने लगे और श्रील महाराज जी एक कागज़ पर लिखने लगे।

एक-एक प्रश्न के उत्तर में यदि पाँच मिनट भी दिये जायें तो सभी उत्तर के लिये कम से कम १०० मिनिट चाहिये थे। किन्तु महाराज जी के लिए एक मिनट भी रुकना सम्भव नहीं था, कारण, महाराज जी को सम्मेलन का उद्घाटन करना था। सो, उन्होंने पाण्डे साहब व उनके साथीयों को अगले दिन आने का अनुरोध किया और सम्मेलन में जाने के लिए उठ खड़े हुये।

पाण्डे साहब असमंजस में पड़ गये और अपने हृदय के भावों को व्यक्त करते हुये कहने लगे, ''स्वामी जी मेरा मन बहुत ही अशान्त है। मुझे एक मिनट के लिये ऐसा कुछ उपदेश दीजिये, कोई ऐसा मन्त्र सुना दीजिये जिससे मेरा मन शान्त हो जाये।''

श्रील महाराज जी हँसते-हँसते कहने लगे, ''पाण्डे साहब! आप मुझको धोखा दे रहे है।''

श्रील महाराज जी के वाक्य सुनकर पाण्डे साहब हैरान हो गये तथा पुनः प्रार्थना करते हुये कहने लगे कि उनका मन सचमुच ही अशान्त है, वे धोखा नहीं दे रहे हैं।

अपने कहने का तात्पर्य समझाते हुये श्रील महाराज जी ने कहा, ''पाण्डे साहब! क्या आपके मन का अस्तित्व है? कारण, आपने अभी थोड़ी देर पहले कहा कि जिसे आप आँखों से नहीं देख पाते, हाथ से छू नहीं सकते, उसे आप नहीं मानते हैं। क्या आपने कभी मन को आँखों से देखा है कि उसका चेहरा कैसा है, वह काले रंग का है या गोरे रंग का? आपने कभी क्या मन को हाथ से छू कर देखा कि वह कठोर है या नरम? जब आपने अपने मन को आँखों से देखा ही नहीं व हाथ से छुआ ही नहीं, तब आपका मन तो है ही नहीं तथा जिस मन का अस्तित्व ही नहीं है, उसकी शान्ति या अशान्ति का प्रश्न हो सकता है क्या?''

साथ-साथ पाण्डे साहब ने उत्तर दिया, ''स्वामी जी आँखों से नहीं देखे जाने पर भी व हाथ से न छुये जाने पर भी चिन्तन रुप क्रिया के द्वारा मन का अस्तित्व अनुभव किया जाता है।''

श्रील महाराज जी ने कहा, ''देखिये, पाण्डे साहब! आपने अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं ही दे दिया। आँखों से न दिखने पर भी, हाथ से स्पर्श न किये जा सकने पर भी मन के अस्तित्व का अनुभव किया जा सकता है, चिन्तन

रुप क्रिया के द्वारा। ठीक इसी प्रकार मैं हमेशा जिन्दा रहना चाहता हूँ, ज्ञान चाहता हूँ व आनन्द चाहता हूँ, इन अनुभवों से मालूम पड़ता है कि मैं सच्चिदानन्दमय आत्म-तत्व हूँ तथा जो आत्मा के कारण हैं, वे परमात्मा हैं। आत्मा व परमात्मा को देखने के लिये भी एक प्रकार की योग्यता चाहिये। उक्त योग्यता अर्जित होने से उनके अस्तित्व का अनुभव किया जाता है। इन प्राकृत नाशवान् इन्द्रियों का मूल्य ही क्या है? सामान्य से एक आघात से आँखों के नष्ट हो जाने पर दिखने वाला जगत दिखना बन्द हो जाता है, कानों के नष्ट हो जाने पर शब्द-जगत बन्द हो जाता है, इस प्रकार की नाशवान् इन्द्रियों के प्रति निर्भर रहकर जो अनु भूति होती है, वह ही वास्तव है, इस प्रकार की बातें आपके समान विद्वान व्यक्ति यदि करें तो हम लोग कहाँ जायेंगे? स्वत: सिद्ध वस्तु के दर्शन की पद्धति उनकी कृपा आलोक के अतिरिक्त अन्य उपाय से सम्भव नहीं हो सकती।

युक्ति-युक्त समाधान

युक्ति-युक्त समाधान

बात उस समय की है (१९४४) जब पूर्व पाकिस्तान (बांग्लादेश) स्वतन्त्र राष्ट्र हो चुका था। एक कॉलेज के प्रांगण में एक विराट धर्म-सभा का आयोजन हुआ। सभा में उपस्थित श्रोताओं में कॉलेज के अनेक छात्र, अध्यापक तथा बहुत से हिन्दु-मुसलमान नर-नारी उपस्थित थे। अपना भाषण प्रारम्भ करने से पूर्व श्रोताओं को निवेदन करते हुए श्रील महाराज जी ने कहा, ''देखिए! भाषण सुन कर यदि किसी के मन में कोई संदेह उत्पन्न हो तो वह भाषण के अन्त में पूछ सकता है, भाषण के बाद प्रश्नों के उत्तर के लिए १५-२० मिनट रखे जाएंगे, परन्तु यदि भाषण में व्यक्त किए गए विचारों के अतिरिक्त किसी का प्रश्न हो तो वह मेरे वासस्थान पर आ सकते है। भाषण के बीच में कोई भी प्रश्न न करे। आपके ऐसा करने से श्रोताओं को भी सुख नहीं होगा तथा भाषण का विषय भी प्रभावित होगा।''

इस प्रकार के निवेदन के बाद भी, श्रील महाराज जी के प्रवचन प्रारम्भ करने के लगभग आधे घण्टे के बाद ही एक मौलवी साहब, जिनके हाथ में एक उर्दू की किताब

थी, अपने स्थान पर खड़े हो गए और प्रश्न करने लगे कि हिन्दुओं में जो बुत परस्तवाद है अर्थात् हिन्दु लोग जो बुत (मूर्ति) पूजा करते हैं, इसकी युक्ति क्या है? सभा के बीच में मौलवी साहब के प्रश्न से अनेकों श्रोता अप्रसन्न हुए और उन्होंने श्रील महाराज जी को प्रश्न का उत्तर न देने के लिए कहा। परन्तु श्रील महाराज जी ने मौलवी साहब के प्रश्न का स्वागत किया और कहा कि मौलवी साहब ने जो प्रश्न किया है, वह एक अच्छा प्रश्न है। सभी को इसका उत्तर सुनना चाहिए। वे जो विषय बोल रहे हैं, उन्हें उससे अलग नहीं होना होगा बल्कि प्रश्न का उत्तर देने से वक्तव्य विषय और भी स्पष्ट हो जाएगा। अत: वे मौलवी साहब के प्रश्न का सभा में ही उत्तर देंगे।

श्रील महाराज जी ने मौलवी साहब के प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व उनको ही एक प्रश्न किया, ''मौलवी साहब! आप खुदा को मानते हैं या नहीं?''

श्रील महाराज जी द्वारा इस प्रकार पूछने पर मौलवी साहब ने कहा, ''निश्चय ही मानता हूँ।''

श्रील महाराज जी ने दुबारा प्रश्न पूछा, ''खुदा की कोई शक्ति है या नहीं?''

उत्तर में मौलवी शाहब ने कहा, ''खुदा सर्वशक्तिमान् है।''

मौलवी साहब के उत्तर को सुन कर श्रील महाराज जी हँसते हुए कहने लगे, ''मौलवी साहब ने तो अपने आप ही अपने प्रश्न का उत्तर दे दिया।''

'सर्वशक्तिमान' शब्द के गंभीर तात्पर्य को न समझ पाने के कारण ही मौलवी साहब की समझ में नहीं आया कि उनके प्रश्न का उत्तर कैसे हो गया है। तभी श्रील महाराज जी ने मौलवी साहब को व अन्य लोगों को समझाने के लिए एक उदाहरण देते हुए कहा, ''कपड़े सिलने वाली एक छोटी सुई के छेद में से (जिसके अन्दर ९० नम्बर का धागा भी आसानी से न घुस पाता हो) क्या मौलवी साहब का खुदा मैमन सिंह ज़िले के विशाल हाथी को इस पार से उस पार तथा उस पार से इस पार ला सकता है या नहीं, बशर्ते कि हाथी के शरीर में ज़रा सा भी ज़ख्म न होने पाए, उसका एक बाल भी न टूटे।''

मौलवी साहब को चुपचाप देख कर श्रील महाराज जी ने कहा, ''मौलवी साहब के खुदा में कितनी शक्ति है, मैं नहीं जानता। लेकिन जिनको मैं भगवान मानता हूँ, उनके

लिए सब कुछ सम्भव है।

कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुम् यः समर्थः स एव ईश्वरः।

भगवान सर्वसमर्थ हैं। वे सब कुछ कर सकते हैं। वे किए हुए को उल्टा कर सकते है, उल्टे किए हुए को फिर पलट सकते हैं। उन सर्वशक्तिमान के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। सर्वशक्तिमान सब कुछ करने में समर्थ हैं। हम जो-जो शक्ति भगवान में कल्पना करेंगे, भगवान में यदि वही शक्तियाँ होती तो उन्हें सर्वशक्तिमान नहीं कह सकते हैं। हमारी कल्पना के अन्दर और बाहर समस्त शक्ति वाले तत्व को ही सर्वशक्तिमान कह सकते हैं। भगवान को सर्वशक्तिमान मान लिया तो वह इस कार्य को कर सकते हैं और उस कार्य को नहीं कर सकते हैं, ऐसी बात कहने का हमारा अधिकार नहीं है। सर्वशक्तिमान भगवान अपने भक्त की इच्छा को पूर्ण करने के लिए किसी श्रीमूर्ति को धारण करके किसी भी स्थान पर आ सकते हैं। यदि कहें कि वे ऐसा नहीं कर सकते तो भगवान को सर्वशक्तिमान कहना निरर्थक है। मनुष्य कर्त्तारुप से मिट्टी द्वारा, धातु द्वारा अर्थात् पंचमहाभूत द्वारा जो निर्माण करेंगे; अथवा जड़ीय मन द्वारा साकार व निराकार जो भी चिन्ता करेंगे, सब जड़

ही होगी। उसको ही बुत (मूर्ति) कहा जाएगा। सनातन धर्म में बुत पूजा की व्यवस्था नहीं है। सनातन धर्म पालन करने वाले, 'श्रीविग्रह' की आराधना करते हैं। भक्त के प्रेम के वशीभूत होकर सर्वशक्तिमान भगवान जो विशेष मूर्ति ग्रहण करते हैं; उसको ही श्रीविग्रह कहते हैं। 'श्रीविग्रह' और 'पुतुल' (बुत) में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। श्रीविग्रह चिदानन्दमय साक्षात् भगवान ही हैं। भगवान की माया से मोहित कामातुर बद्ध जीव श्रविग्रह का चिन्मय स्वरूप दर्शन करने में असमर्थ होते हैं। यहाँ तक कि यदि भगवान साक्षात् उनके सामने उपस्थित हो जाएँ तो भी वह उनको भगवान रूप से पहचान नहीं सकेंगे। शुद्ध भक्ति नेत्रों द्वारा ही भगवत् अनुभूति हो सकती है। भगवान के दर्शनों के लिए जो योग्यता चाहिए, उसको अर्जित किए बिना भगवत्-दर्शन नहीं होता है।

श्रील महाराज जी के मुखारविन्द से अपने प्रश्न का इस प्रकार युक्ति-युक्त (तर्क-संगत) समाधान पाकर मौलवी साहब संतुष्ट चित्त से अपने स्थान पर बैठ गए।

मौलवी के साथ संवाद

मौलवी के साथ संवाद

आसाम के हाउली में एक विशाल धर्म-सभा हुई थी (१९४७) जिसमें हज़ारों हिन्दु व मुसलमान नर-नारी उपस्थित थे। प्रवचन के बीच एक मौलवी साहब ने श्रील महाराज जी को एक प्रश्न किया, ''क्या आत्मा-परमात्मा को किसी ने देखा है? आप आत्मा-परमात्मा की बात कहकर दुनिया के लोगों को धोखा नहीं दे रहे हैं, उसका प्रमाण क्या है?''

मौलवी साहब का प्रश्न सभा के नियम के विरुद्ध था, इसलिये उनके प्रश्न से श्रोता नाराज़ हो गये और उन्होंने श्रील महाराज जी को प्रश्न का उत्तर देने के लिए मना कर दिया। परन्तु उक्त प्रश्न का उत्तर न देने से कदाचित् अज्ञ व्यक्ति यह समझें कि इसका उत्तर है ही नहीं, इसलिए श्रील महाराज जी ने सभा में ही मौलवी साहब के प्रश्न का उत्तर दिया।

मौलवी साहब के हाथ में एक पुस्तक थी। श्रील महाराज जी ने मौलवी साहब को पूछा-''आपके हाथ में जो पुस्तक है, उसका नाम क्या है?''

मौलवी साहब पुस्तक को किताब कहते हैं व किताब का नाम बताते हैं।

श्रील महाराज जी ने कहा, ''बंगला, आसामी, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी इत्यादि भाषाओं का ज्ञान व आँखे ठीक होने पर भी मैं उस किताब का वह नाम नहीं देख पा रहा हूँ, क्यों? मौलवी साहब मुझे धोखा नहीं दे रहे हैं, इसका क्या प्रमाण है?''

श्रील महाराज जी के प्रश्न को सुनकर मौलवी साहब के आसपास जो लोग बैठे थे उन्होंने भी किताब को अच्छी तरह से देखा और श्रील महाराज से कहा कि मौलवी साहब किताब का जो नाम बता रहे हैं, वह ठीक है।

इसके उत्तर में श्रील महाराज जी ने कहा कि आप सब लोग एक साथ मिलकर मुझे धोखा दे रहे हैं।

मौलवी साहब कुछ आश्चर्यचकित हुये और उन्होंने जानना चाहा कि श्रील महाराज जी क्या देख रहे हैं व उनके इस प्रकार बोलने का अभिप्राय क्या है?

तो श्रील महाराज जी ने कहा कि, ''मैं तो देखता हूँ कि एक कौवा स्याही पर बैठा होगा। बाद में वही आपकी इस किताब के ऊपर बैठ गया होगा, ये उसी के पैरों के

निशान हैं।''

श्रील महाराज जी के इस प्रकार के मंतव्य को सुन कर मौलवी साहब ने कहा कि आप निश्चय ही उर्दू नहीं जानते।

श्रील महाराज जी ने स्वीकार किया कि हाँ, मैं उर्दू नहीं जानता हूँ।

मौलवी साहब ने कहा, ''तब आप उर्दू लेख को कैसे समझ पायेंगे? आपको उर्दू सीखनी होगी। तब आप भी देख पाओगे कि इस किताब का नाम वही है जो मैं बता रहा हूँ।''

श्रील महाराज जी ने मौलवी साहब की बात पर ही उनको समझाते हुए कहा, ''बहुत सी भाषाएँ जानते हुए भी, बहुत सा ज्ञान होने पर भी, उर्दू भाषा को समझने के लिये उर्दू का ज्ञान आवश्यक है। आँखों की दृष्टि शक्ति ठीक रहने पर भी, उर्दू का ज्ञान न रहने पर उर्दू भाषा के शब्द के रुप को व अर्थ को समझा नहीं जा सकता, देखा नहीं जा सकता। उसी प्रकार दुनियादारी की बहुत सी अभिज्ञता (ज्ञान) व योग्यता रहने पर भी, आत्मा वा परमात्मा को समझने की विशेष योग्यता जब तक अर्जित नहीं हो जाती, तब तक आत्मा व परमात्मा की अनुभूति नहीं होती।

दर्शन भी दो प्रकार का होता है, वेद-दृक् व माँस-दृक अर्थात् ज्ञानमय दर्शन व माँसमय दर्शन। माँसमय नेत्रों से अर्थात् जड़ नेत्रों से जड़-वस्तु छोड़ कर अन्य वस्तु नहीं देखी जा सकती। जड़ातीत (इन्द्रियों से अतीत) वस्तु जब स्वयं प्रकाशित होती है तो उसके कृपा-आलोक से ही उसका दर्शन किया जा सकता है। सद्गुरु के श्री चरणों में शरणागत व्यक्ति के हृदय में ही तत्व वस्तु का आविर्भाव होता है।''

संक्षिप्त परिचय

विश्वव्यापी श्रीचैतन्य मठ एवं श्रीगौड़ीय मठ समूह के प्रतिष्ठाता नित्यलीलाप्रविष्ट परमहंस ॐ १०८ श्री श्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर प्रभुपाद जी के प्रियतम पार्षद, परमहंस परिव्राजकाचार्य, ॐ १०८ श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज जी, पद्मावती नदी के मुख की ओर स्थित अत्यन्त पवित्र एवं रमणीय वातावरण वाले स्थान काँचनपाड़ा गाँव में स्वधर्मनिष्ठ व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित श्री निशिकांत बंदोपाध्याय एवं भक्तिमति माता शैवालिनी देवी को अवलम्बन कर एक दिव्य बालक के रूप में इस भूधरा पर प्रकट हुये।

जिस प्रकार 'उत्थान एकादशी' के दिन परमकरुणामय, परमानन्द स्वरूप श्रीहरि की जागरणलीला सब जीवों के लिए मंगलदायक और आनन्दवर्धक होती है, उसी प्रकार त्रिताप से पीड़ित जीवों के सौभाग्य से श्रीहरि के प्रियतम जन एवं करुणामय मूर्ति श्रील महाराज जी सब जीवों के वास्तविक मंगल के लिए एवं उनके उल्लास वर्धन हेतु 'उत्थान एकादशी' को आविर्भूत हुये।

अद्भुत रूप लावण्ययुक्त सुदृढ़ देह, मधुर स्वभाव, अद्भुत न्यायपरायणता, विषयों के प्रति अनासक्ति, भगवान में अनुराग और सहनशीलता जैसे अनेक असाधारण गुण आप में शैशव काल से ही प्रकाशित थे जिन्हें देखकर सभी आश्चर्यचकित रह जाते थे। आपकी प्राथमिक शिक्षा कांचनपाड़ा ग्राम तथा भट्टग्राम में हुई। विद्यार्थी काल में भी आपके श्रीमुख से अत्यंत ज्ञानयुक्त बातें सुनकर सभी अध्यापक विस्मित हो जाते थे। एक बार विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिता के अन्तर्गत बहुत चोट लग जाने पर आपके श्रीअंगों से काफी खून बहने लगा। अध्यापक जब आपके घावों को साफ़ करने व दवाई लगाने तथा अनेक प्रकार से सहानुभूति दिखाने लगे ताकि आप अधिक कष्ट महसूस न करें, तब आपने उनसे कहा, ''भगवान जो करते हैं सब मंगल करते हैं, मेरे पूर्व जन्मों का फल और भी खराब था किन्तु भगवान की कृपा के कारण उतनी चोट नहीं लगी। बालक के मुख से यह अद्भुत बात को सुनकर सबको तुरंत इस बात का एहसास हो गया और उन्होंने सबके सामने यह घोषणा कर दी की, यह बालक कोई सामान्य बालक नहीं है।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जब आप कलकत्ता आये तो भगवान के लिए आपकी विरह-व्याकुलता अपने चरम पर थी। आपके पूर्वाश्रम के संबंधी श्री नारायण मुखोपाध्याय जी ने आपको अपने कमरे में कई बार व्याकुलता से भगवान को पुकारते एवं रोते हुए देखा, उस समय आप मात्र एक समय भोजन करते और निरंतर भगवत् चिंतन में रहते। एक बार स्वप्न में श्री नारदजी ने सांत्वना दी एवं मंत्र प्रदान किया, लेकिन स्वप्न टूटने पर आप मंत्र भूल गए, बहुत प्रयासों के बाद भी स्मरण नहीं हो पाया, जिससे मन में भगवान के लिए छटपटाहट और बढ़ गई और आपने संसार त्यागने का संकल्प लिया। अपनी भक्तिमति माताजी से आशीर्वाद प्राप्त कर हिमालय की ओर प्रस्थान कर गए। चुम्बक द्वारा खींचे जाने पर जिस प्रकार कोई भी बाधा लोहे को रोक नहीं पाती, उसी प्रकार जब आत्मा का भगवान के प्रति तीव्र आकर्षण होता है तो जगत का कोई भी बन्धन उसे रोकने में समर्थ नहीं होता।

जंगल से घिरे हुए निर्जन पहाड़ पर तीन दिन और तीन रात भोजन व निद्रा का परित्याग कर अत्यन्त व्याकुलता के साथ भगवान को पुकारते पुकारते तल्लीन हो गए। भगवान

के दर्शनों की तीव्र इच्छा होने के कारण आपका बाह्य ज्ञान जैसे लुप्त प्रायः हो गया था। उसी समय आकाशवाणी हुई, ''आप जहाँ पहले रहते थे वहां आपके होने वाले श्रीगुरुदेवजी का आविर्भाव हो चुका है, इसलिए आप अपने स्थान को छोड़कर वापस लौट जाए'', दैववाणी के आदेश को शिरोधार्य करके आप हिमालय से नीचे हरिद्वार में आ गए। वहाँ आपने कुछ दिन ठहर कर आगे जाने का निश्चय किया।

परन्तु दैवचक्र से कुछ दिन हरिद्वार में रहने की अभिलाषा में विघ्न आ उपस्थित हुआ। एक हिन्दी भाषी धनी व्यक्ति, अपनी धर्म-पत्नी को साथ लेकर तीर्थस्नान व दर्शन करने वहाँ आये थे। वे दोनों आपकी यौवनावस्था और सुन्दरता को देखकर आकर्षित हुए और आपको बहुत सी खाने की वस्तुएँ दीं और आपके साथ बहुत प्यार और स्नेह का व्यवहार किया। उनकी कोई सन्तान न थी। उन्होंने यह प्रस्ताव रखा, ''यदि आप हमारे प्रतिपाल्य पुत्र बन जाए तो आप हमारी सारी सम्पत्ति के अधिकारी बन सकते हैं।'' वे अपना प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए हठ करने लगे । मन-ही-मन आपने चिन्ता की-''मैं तो संसार

छोड़कर आया हूँ, परन्तु माया मुझे एक अन्य तरीके से आकर्षित करना चाहती है।'' आपने उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और हरिद्वार में अधिक ठहरने की इच्छा को छोड़कर कलकत्ता वापस आ गये। जिस हृदय में भगवान को पाने की निष्कपट इच्छा व तीव्र व्याकुलता हो तो उस हृदय को जगत का कोई भी प्रलोभन खींच नहीं सकता। यह घटना लगभग १९८५ की है।

उसी वर्ष कलियुग पावनकारी श्री चैतन्य महाप्रभुजी के प्रकट स्थान, श्रीधाम मायापुर में महातेज से परिपूर्ण, गौरकान्ति, घुटनों तक लम्बी भुजाएँ, दीर्घ आकृतिवाले अतिमर्त्य महापुरुष जगतगुरु श्रील भक्ति सिद्धांत सरस्वती ठाकुर प्रभुपादजी के अलौकिक दर्शन करके आप विस्मित हो गये, तब ही आपके हृदय में एक ऐसी अनुभूति हुई कि निश्चय ही यह मेरे दैववाणी के बताये हुए श्रीगुरुपादपद्म ही हैं, जिनका आश्रय करने से मुझे अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होगी। आप बड़ी श्रद्धा के साथ प्रभुपाद जी को प्रणाम कर उनके चरणों में बैठ गये। बहुत समय तक अपूर्व हरिकथा श्रवण करके आपने अपने हृदय में एक अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव किया।

श्रील प्रभुपाद जी की दिव्य मूर्ति और वीर्यवती कथा आपके हृदय में गम्भीर रूप से घर कर गई। प्रभुपाद जी के सेवकों से मालुम पड़ा कि श्रील प्रभुपाद जी शीघ्र ही कलकत्ता पदार्पण करेंगे। आप अपने आपको परम सौभाग्यवान समझ कर, प्रसन्नचित्त होकर कलकत्ता वापस आ गये और प्रभुपाद जी के कलकत्ता आने पर आप प्रतिदिन नियमित रूप से उनसे हरिकथा सुनने के लिए जाने लगे। वैष्णव सेवा द्वारा हरिभजन में आनेवाली सब बाधायें दूर होंगी और शीघ्र ही भगवत् कृपा की प्राप्ति होगी, इस विचार से आप गुप्त रूप से वैष्णव सेवा के लिये मठ में बहुत सारे द्रव्य भेजने लगे।

आपने विभिन्न शास्त्रों के अध्ययन की लीला भी प्रकाशित की। आपने शंकराचार्यजी के भाष्ययुक्त वेदान्त का पाठ और अध्ययन करके उसे ही बुद्धिमत्ता की चरम सीमा समझा था परन्तु श्रील प्रभुपाद जी के मुखारविन्द से श्रीमहाप्रभु जी की शिक्षा और सिद्धान्त सुन कर, उसे अधिक युक्तिसंगत जानकर हृदयंगम् कर लिया। श्रील गुरुपादपद्म में आत्मसमर्पण की लीला करते हुए आपने श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुरजी के निकट

४ सितम्बर, सन् १९२७, श्रीराधाष्टमी की शुभ तिथि पर श्रीहरिनाम और दीक्षा मन्त्र ग्रहण किया। श्रील प्रभुपादजी ने आपका नाम श्री हयग्रीव दास ब्रह्मचारी रखा। आपकी गुरुनिष्ठा एवं क्लान्तरहित सेवा प्रचेस्टा को देख कर सभी आश्चर्यचकित रह जाते। इसलिए श्रील प्रभुपाद आपको 'वोल्केनिक एनर्जी' वाले कहते थे। यही कारण था कि आप थोड़े समय में एक तेजस्वी प्रचारक के रूप में प्रख्यात हो गए।

पाश्चात्य देशों में भी श्रीमन्महाप्रभु जी की वाणी का प्रचार हो, श्रील प्रभुपाद का इस प्रकार आग्रह होने से उन्होंने आपको इस कार्य के उपयुक्त समझकर आपको भेजना निश्चित किया, पासपोर्ट की व्यवस्था भी हो गयी। तभी राजर्षि कुमार शरदिन्दु नारायण राय जी ने प्रभुपादजी को कहा, विलायत परियों का देश है। वहाँ कम उम्र के सुन्दर युवक को भेजना मैं उचित नहीं समझता हूँ। किसी वयस्क व्यक्ति को भेजना ठीक समझता हूँ।

श्रील प्रभुपाद जी ने राजर्षि शरदिन्दु की बात को गम्भीरता से लिया और श्रील गुरुदेव की जगह श्रीमद् भक्ति प्रदीप तीर्थ महाराज जी को भेजना निश्चित किया।

आपमें भक्ति-सिद्धान्तों के प्रतिकूल विचारों को खण्डन करने, भक्ति के अनुकूल विचारों को स्थापन कर समझाने की अति-अद्भुत क्षमता थी, इसलिए श्रील प्रभुपाद जी ने बंगाल के श्रेष्ठ पंडित श्री पंचानन तर्क रत्न, जिसने श्रील प्रभुपाद जी के शास्त्र युक्ति सम्मत दैववर्णाश्रम धर्म विचार की तीव्र समालोचना की थी, और भारत के विख्यात वैज्ञानिक डॉ. सी.वी.रमन के साथ साक्षात्कार करने के लिए आपको ही भेजा। वार्तालाप में देखा गया की अगाध पांडित्य होने पर भी सिद्धान्त-विषय में दोनों अनेक स्थानों पर सुसमाधान न दे सके, वे विचार करते-करते blind lane में पहुंच कर प्रश्नों के सही उत्तर देने में असमर्थ हो जाते।

आपकी प्रत्युत्पन्नमतित्व एवं उपस्थित बुद्धि (Presence of mind) इस प्रकार थी कि आपके सामने कोई अयुक्तिसंगत बात टिक नहीं सकती। केवल तथाकथित पांडित्य के द्वारा ये असाधारण योग्यता सम्भव नहीं है। जो शिष्य गुरुदेव के प्रति समर्पित-आत्मा है, जिन्होंने गुरुदेव जी की कृपा से सत्य वस्तु को साक्षात् अनुभव कर लिया है, गुरु शक्ति के प्रभाव से वे एक

प्रकार की ऐसी ईश्वरीय शक्ति प्राप्त कर लेते हैं, जिसके सामने भगवद्-अनुभूतिरहित व्यक्तियों की बुद्धिमत्ता नहीं चल पाती।

सन् १९४४ फाल्गुनि पूर्णिमा को, गौर आविर्भाव तिथि पर आपने श्री टोटा गोपीनाथजी के मन्दिर (श्रीपुरुषोत्तम धाम, उड़ीसा) में अपने गुरुभाई परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्री श्रीमद् भक्ति गौरव वैखानस महाराज जी से सात्वत: विधान के अनुसार त्रिदण्ड संन्यास ग्रहण किया और परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात्, विश्व वैष्णव राजसभा ने आपको विशेष रूप से सम्मानित किया। श्री विश्व वैष्णव राजसभा से लिखित अभिनन्दन पत्र में आपकी निर्भीकता, सत्साहस एवं प्रचार में जन-साधारण को मुग्ध करने की क्षमता तथा इनके अतिरिक्त सर्वोपरि श्रील प्रभुपाद जी के आनन्द-वर्धनकारी व वैष्णव प्रीति आदि महान गुणों का वर्णन किया गया।

गुरुनिष्ठा तथा गुरुदेवजी के वैभव (गुरुभाईयों) में प्रीति आपका एक आदर्श थी। श्रील प्रभुपादजी के अप्रकट हो

जाने के बाद यदि कभी आपके गुरुभाई किसी विपरीत परिस्थिती में पड़ जाते थे तो आप हमेशा अपने सुख-दु:ख की चिंता न करके उनकी सहायता करने के लिए उनके पीछे खड़े हो जाते थे। उस समय मठ की बाहरी अवस्था अनुकूल न होने के कारण व उस विपरीत परिस्थिति से सामञ्जस्य न बिठा पाने के कारण प्रभुपाद जी के बहुत से योग्य शिष्य मठ छोड़कर वापस घर जाने की सोच रहे थे तो आपने ही बड़ी मुश्किल से उनको समझा-बुझाकर मठ में रखा। यहाँ तक कि, जो गुरुभाई घर चले गये थे उनके घर जा कर स्वयं क्लेश सहन करते हुए भी उन्हें किसी तरह से समझा-बुझा कर वापस मठ में लाये।

जिस प्रकार श्रीकृष्ण के वैभव (कृष्ण-भक्तों) में प्रीति द्वारा ही श्रीकृष्ण प्रीति का यथार्थ प्रमाण पाया जाता है, उसी प्रकार गुरुदेव के वैभव (गुरुभाईयों) में प्रीति द्वारा ही गुरुप्रीति की पराकाष्ठा प्रदर्शित होती है। आपकी आपके गुरुभाईयों में प्रीति की पराकाष्ठा आपके आदर्श जीवन के शेष मुहूर्त तक सुस्पष्ट रूप में अभिव्यक्त रही। आपके असमान्य महापुरुषोचित व्यक्तित्व के कारण संपूर्ण भारत में श्री चैतन्य गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान के प्रचार केन्द्र फैल

गए। भारत के उत्तर, दक्षिण और पूर्व से पश्चिम सीमा के असंख्य नर-नारी श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रेम-धर्म में आकृष्ट हो आपका आश्रय ग्रहण कर साधन भजन कर रहे हैं। जिस प्रकार भगवान आर्विभूत होकर अपने भक्तों के विरहात्मक भजन की उत्कर्षता के लिए पुनः अप्रकट लीला करते हैं उसी प्रकार भगवान के भक्त भी विप्रलम्भात्मक भजन प्रकट करने के लिए अप्रकट लीला करते हैं। जितना प्रेम सम्बन्ध प्रगाढ़ होगा विरह भी उतना ही तीव्र होगा। अप्रकट लीला के द्वारा आनुषंगिक रूप से नश्वर जगत की क्षणभंगुरता की शिक्षा का भी प्रदर्शन होता है।

२७ फरवरी सन् १९७९ मंगलवार शुक्ल प्रतिपदा तिथि को कलकत्ता में ३५ सतीश मुखर्जी रोड पर स्थित श्री चैतन्य गौड़ीय मठ में अपनी भजन कुटीर में महासंकीर्तन के कोलाहल में इस जगत की लीला का संवरण कर सबको विरह सागर में निमज्जित करते हुए नित्यलीला में प्रवेश कर गए। आपके अदर्शन की विरह वेदना आपके प्रियजनों के लिए असहनीय है। अपने आपको नितांत असहाय जानकर वे आज भी आंसू बहा रहे हैं।